



आदिवासी छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन: महासमुंद क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में

मृदुला गुप्ता, शोध मार्गदर्शिका, शिल्पी चंद्राकर, एम.एड. प्रशिक्षार्थी, शिक्षा विभाग
पंडित हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

मृदुला गुप्ता, शोध मार्गदर्शिका
शिल्पी चंद्राकर, एम.एड. प्रशिक्षार्थी
E-mail : mridulagupta749@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/03/2026
Revised on : 29/05/2026
Accepted on : 07/06/2026
Overall Similarity : 00% on 30/05/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: May 30, 2026 (03:13 PM)
Matches: 0 / 1384 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

शिक्षा ग्रहण करके विद्यार्थी स्वयं का समाज एवं राष्ट्र का उन्नति करता है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का सभी सुविधायें उपलब्ध न होने के कारण विद्यार्थियों को शहर की ओर जाना पड़ता है, तथा वे कभी-कभी छात्रावास संबंधित समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं जहाँ उनका सर्वांगीण विकास बाधित होता है। ये समस्याओं उनके जीवन पर अपना सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव डालती है। अतः यह आवश्यक है कि छात्रावास में विशेषतः आदिवासी छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की समस्याओं का सामंजस्यपूर्ण व व्यावहारिक समाधान ढूँढा जाये, और राष्ट्र के इन भावी नागरिकों के लिए विकासोन्मुख जीवन की परिकल्पना की जाये।

मुख्य शब्द

छात्रावास, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्या.

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन को बेहतर बनाने और समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए ज्ञान, कौशल और मूल्यों को प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है। यह एक व्यवस्थित प्रणाली जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, अनुभव, कौशल और सकारात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करता है जिससे वे सभ्य परिष्कृत और शिक्षित बनते हैं।

शिक्षा व्यक्ति को न केवल व्यक्तिगत रूप से विकसित करती है, बल्कि देश के विकास में भी योगदान देने में सक्षम बनाती है। शिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह लोगों को रोजगार के लिए तैयार करती है, गरीबी कम करती है और समाज को विकसित करती है। शिक्षा व्यक्ति को सशक्त बनाती है जिससे वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सके और समाज में अपनी आवाज उठा सके, समस्याओं का समाधान कर सके और रचनात्मक बन सके।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा

आवश्यकता है एवं शिक्षा लेने के लिए छात्र-छात्राओं को शहरों की ओर जाना पड़ता है, क्योंकि आज भी गाँवों तक शिक्षा की सभी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हुई हैं। ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्र के छात्र-छात्राएँ शहरों में जाने के बाद साधारणतः शिक्षा देने वाले छात्र-छात्राओं को यहाँ खाने एवं रहने की सुविधा मुहैया कराई जाती है, कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा विषय विद्यार्थियों के विकास एवं संरक्षण की जगह अर्थात् छात्रावास है।

शिक्षा और छात्रावास के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। छात्रावास छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, जबकि शिक्षा छात्रों को छात्रावास में बेहतर ढंग से समायोजित करने और सफल होने में करती है।

शोधार्थी द्वारा इस शोध विषय का चयन इसलिए किया गया है ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि आदिवासी छात्रावास के छात्राओं को शासन द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं का किस स्तर पर पालन किया जा रहा है?

अध्ययन की आवश्यकता

अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावासी छात्राओं हेतु योजनाओं का लाभ उन्हें प्राप्त हो रहा है एवं उनके शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक एवं पारिवारिक समस्या पर इसका प्रभाव पड़ रहा है, इसका अध्ययन करना आवश्यक है। स्वस्थ एवं क्रियाशील रहने के लिये उन्हें रहन सहन की व्यवस्था एवं पौष्टिक आहार एवं स्वच्छ वातावरण की भी आवश्यकता है ताकि छात्रावास में उसका ठहराव हो एवं उत्तमचरित्र का निर्माण हो सके।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रत्येक कार्य का एक निश्चित उद्देश्य होता है, फिर प्राप्त करने हेतु व्यक्ति निरंतर प्रयत्नशील रहता है, अतः लघुशोध प्रबंध हेतु समस्या के चयन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं

1. छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।
2. छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना।
3. छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना।
4. छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की पारिवारिक समस्याओं का अध्ययन करना।

परिसीमाएँ

समस्या का व्यावहारिक रूप से अध्ययन के लिए सीमांकन करना अति आवश्यक है। समय को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध प्रबंध को निम्न क्षेत्र तक सीमित रखा जाएगा।

प्रस्तुत शोध कार्य महासमुन्द जिले के 5 आदिवासी छात्रावास के अंतर्गत कुल 100 जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन किया गया।

न्यादर्श: यादृच्छिक न्यादर्श का चयन किया गया।

उपकरण: शोध कार्य के अंतर्गत छात्रावास से संबंधित समस्याओं के लिए उपकरणों की आवश्यकता होती है। परिशुद्ध वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

विधि: शोधार्थी का कार्यक्षेत्र व्यापक है एवं समय का अभाव है, इसलिए संपूर्ण क्षेत्र में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

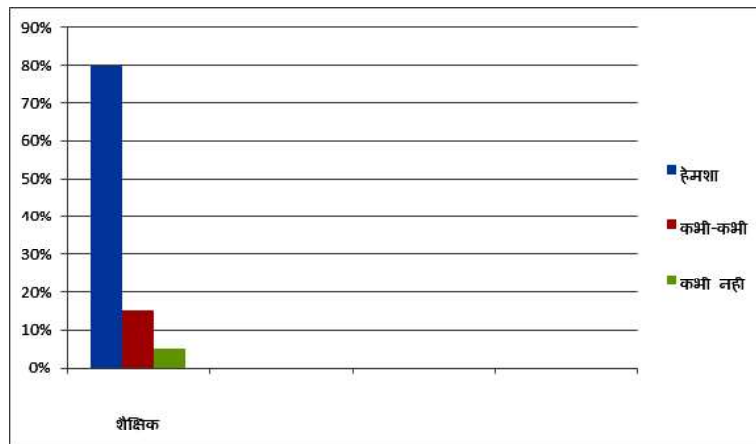
सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी ने शोध पत्र में आदिवासी छात्रावास में रहने वाली विद्यार्थियों को होने वाली शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं के अध्ययन हेतु शोध उपकरणों की सहायता से आंकड़ों को एकत्र कर उनका सारणीयन कर विश्लेषण एवं व्याख्या द्वारा वस्तु स्थिति की जानकारी प्रस्तुत की है।

छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं से संबंधित गणना

क्र.	प्रश्नावली	हमेशा	कभी-कभी	कभी नहीं
01	आपको लगता है की छात्रावास में रहने से आपकी पढ़ाई में मदद मिलता है।	80%	15%	5%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)



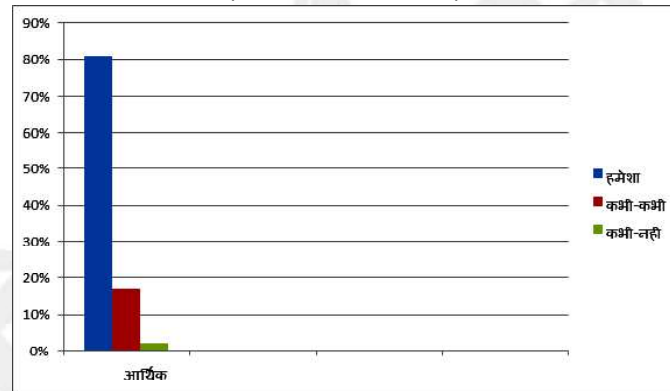
निष्कर्ष

- 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को छात्रावास में रहने से पढ़ाई में मदद मिलती है।
- 15 प्रतिशत विद्यार्थियों को छात्रावास में सामूहिक रूप से अध्ययन करने का आभाव पाए जाने के कारण तथा पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण न होना।
- 5 प्रतिशत विद्यार्थियों को छात्रावास में रहने से पढ़ाई में कभी नहीं मदद मिलने का कारण व्यक्तिगत ध्यान एवं स्वअध्ययन का अभाव।

छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की आर्थिक समस्याओं से संबंधित गणना

क्र.	प्रश्नावली	हमेशा	कभी-कभी	कभी-नहीं
01	अपने अध्ययन के दौरान आपको पुस्तक, कॉपी व लेखन सामग्री के लिए स्वयं खर्च करना पड़ता है।	81%	17%	2%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)



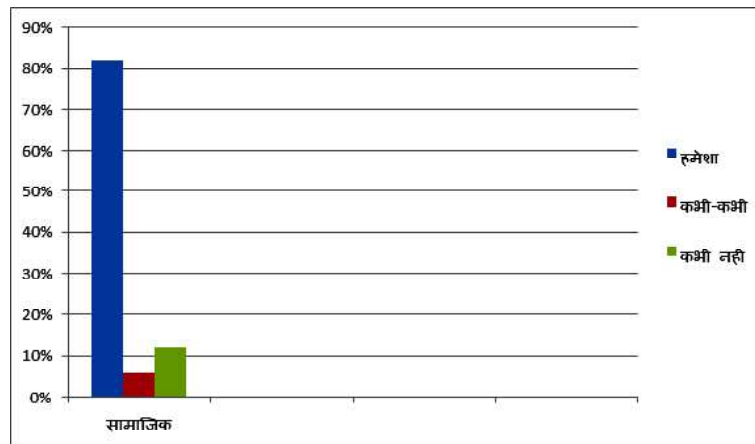
निष्कर्ष

- 81 प्रतिशत विद्यार्थियों को अपने अध्ययन के दौरान शिक्षण सहायक सामग्री के लिए स्वयं खर्च करना पड़ता है।
- 17 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार कभी-कभी खर्च करना पड़ता है इसका कारण इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थियों द्वारा उचित रूप से नहीं दिया गया मुख्य कारण यह है कि सामूहिक उत्तर प्राप्त हुआ जो अनुचित है।
- 2 प्रतिशत विद्यार्थियों के अनुसार कभी नहीं खर्च करते हैं इसका उत्तर भी प्रश्न को पूरी तरह समझे बिना विद्यार्थियों द्वारा जवाब दे दिया गया है।

छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित गणना

क्र.	प्रश्नावली	हमेशा	कभी-कभी	कभी नहीं
01	आपको छात्रावास में दोस्त बनाने में आसानी होती है।	82%	6%	12%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)



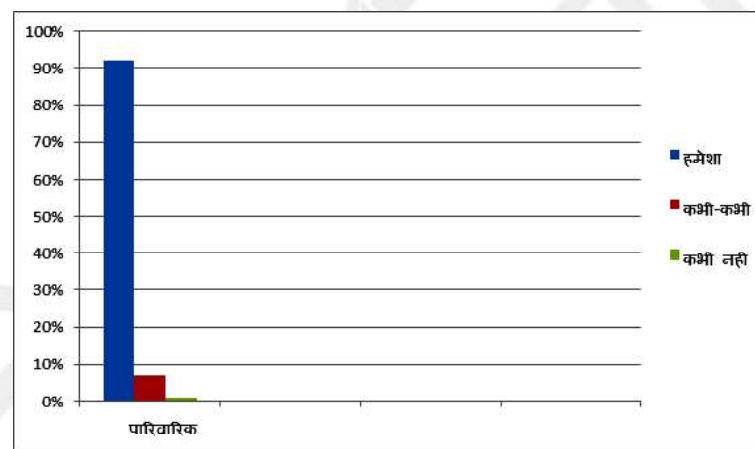
निष्कर्ष

- 82 प्रतिशत विद्यार्थियों को छात्रावास में दोस्त बनाने में आसानी होती है।
- 6 प्रतिशत विद्यार्थियों को छात्रावास में दोस्त बनाने में कभी-कभी आसानी होने के कारण यह है कि वे बच्चे अंतर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं और आपस में जल्दी से मिल नहीं पाते।
- 12 प्रतिशत विद्यार्थियों को छात्रावास में दोस्त बनाने में कभी नहीं आसानी होने का कारण है कि वे नए वातावरण में असुरक्षित महसूस करते हैं एवं एकांत प्रिय होते हैं।

छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की पारिवारिक समस्याओं से सम्बंधित गणना

क्र.	प्रश्नावली	हमेशा	कभी-कभी	कभी नहीं
01	क्या आपको लगता है कि आपका परिवार आपको समर्थन देता है।	92%	7%	1%

(स्रोत: प्राथमिक समंक)



निष्कर्ष

- 92 प्रतिशत विद्यार्थियों को परिवार से हमेशा समर्थन मिलता है।
- 7 प्रतिशत विद्यार्थियों को परिवार से कभी-कभी समर्थन मिलने का कारण बताया कि परिवार में जागरूकता या समझ की कमी होना।
- 1 प्रतिशत विद्यार्थियों को परिवार से कभी नहीं समर्थन मिलने का कारण बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होना संसाधनों की अनुपलब्धता है।

निष्कर्ष

आदिवासी छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों को होने वाली शैक्षिक आर्थिक, सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं के स्तर में प्रभाव सकारात्मक है एवं निरंतर सुधार हो रहा है।

संदर्भ सूची

1. चौधरी, प्रीति; राठोर, हेमंत (2021) आश्रम विद्यालयों के आदिवासी छात्रों के समक्ष आने वाली समस्याओं का अध्ययन. वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, 4(4), 9-11, ISSN: 2581-6241.
2. जार्ज, पोइकायिल (2023) सावित्री बाई फुले मेमोरियल आश्रम स्कूल कासरगोड के आदिवासी बच्चों के लिए एक बुरा सपना है का अध्ययन. <http://www.onmnoroma.com>, Assessed on 28/02/2026.
3. कपूर, राधिका (2019) आदिवासी शिक्षा में समस्याओं का अध्ययन करना. दिल्ली विश्वविद्यालय <http://www.researchgate.net>, Assessed on 28/02/2026.
4. आटोप्लाकल, जोशेन जोजी; अंबू, के (२०२२) भारत में आदिवासी छात्रों के समक्ष स्कूली शिक्षा के मुद्दे और चुनौतियाँ एक आलोचनात्मक समीक्षा का अध्ययन. *इंटरनेशनल जनरल पांडिचेरी विश्वविद्यालय*, P-ISSN: 2321-788X, E-ISSN: 2582-0397, 9(4), 25-30, <http://orcid.org/000-0003-4664-8390>, Manuscript-ID-ASH-2022,09044823, Assessed on 28/02/2026.
5. साहू, दीपिका (2015–17) आदिवासी छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन. एम.एड. लघुशोध प्रबंध, पं. हरिशंकर स्मृति महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
6. विष्ट, अनीता (2024) आदिवासी समाज एवं उनकी समस्याएँ का अध्ययन. *IJFMR*, 240113025 पं. पूर्णानंद तिवारी राजकीय महाविद्यालय दोषापानी नैनीताल E-ISSN: 2582-2160, 06(1), 1-4, www.ijfmr.com, Assessed on 24/02/2026.
7. विनु (2021) जनजातीय शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता: मुद्दे और चुनौतियों का अध्ययन. *इंटरनेशनल जनरल ऑफ इंडिया साइकोलॉजी* E-ISSN: 2348-5396, P-ISSN: 2349-3429, 9(1) DIP:1801.060\ 20210901, DOI:10.252150901.060, <https://www.ijip.in>, Assessed on 22/02/2026.
